Research Scholar : Kanhaiya Lal

Supervisor : Dr. Mukesh Kumar Mirotha

Department : Hindi

Tittle : Upbhoktawadi Sanskriti Ke Sandarbh Mein Samkaleen Hindi Upanyason Ka Adhyayan (1991 Se 2010 Tak)

संक्षिप्त शोध सार

उपभोक्तावादी संस्कृति वर्तमान समय का सच है। आज हर व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाकर सभी सुविधाजनक वस्तुओं को हासिल करने की इच्छा रखता है। बाजार में जीवन के हर पहलू से जुड़ी वस्तुएँ मौजूद हैं। ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति की अधिकांश समस्याओं का समाधान बाजार के पास है, आप बस पैसा खर्च कीजिए और समाधान स्वयं आपके पास चलकर आएगा।

बाजार के वर्तमान स्वरुप की निर्मिति में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का विशेष महत्त्व रहा है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के तहत बीसवीं सदी के अंतिम दशक की शुरुआत में भारत ने मुक्त व्यापार की रणनीति अपनाई। दुनिया के अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंधों में आने वाली रुकावटों को दूर किया गया। अब विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में आसानी से अपने उद्योग-धंधे स्थापित करने लगीं। इन उद्योगों के अंतर्गत व्यापक स्तर पर उत्पादन आरम्भ हुआ। उत्पादित वस्तुओं को खपाने हेतुव सूचना तकनीक, विज्ञापन, मीडिया और बाजार के गठजोड़ का सहारा लिया गया। धीरे-धीरे एक ऐसा उपभोक्ता समाज अस्तित्व में आया, जो बाजार में उपलब्ध हर नई वस्तु के उपभोग के लिए तैयार था।

नब्बे के दशक में आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के फलस्वरूप समाज में कई तरह के परिवर्तन आए। इन सभी परिवर्तनों को उस दौर के रचनाकारों ने बारीकी से देखा और अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ आबादी का बड़ा हिस्सा दो वक्त की रोटी के लिए मशक्कत करता हो, वहाँ भूमंडलीकरण के चलते गहरी विषमताएँ सामने आने लगीं। हम जीडीपी के भँवर में उलझे रहे और विकसित देश हमारे संसाधनों का तेजी से खात्मा करने लगे। यह एक प्रकार

का साम्राज्यवाद ही था, जिसे कुछ विद्वान नव-साम्राज्यवाद संज्ञा भी देते हैं। वर्तमान समय में अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हमारे यहाँ व्यवसाय करके मोटा मुनाफा कमा रही हैं और हम बिना कुछ सोचे-विचारे उनके द्वारा प्रायोजित जीवन-शैली को अपनाते जा रहे हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्प्रभावों से बचने और आगामी पीढ़ियों के हितों की रक्षा हेतु व्यक्ति को जरुरत और चाहत के अंतर को समझना होगा। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के चंगुल से बचने हेतु विवेकपूर्ण निर्णय लेने होंगे। वास्तव में देखा जाए तो वर्तमान समय में अधिकांश घरों में अनेक ऐसी वस्तुएँ मौजूद हैं, जिनका कोई उपयोग नहीं है। ये सभी वस्तुएँ बाजार और समाज के दबाव के चलते अनायास ही घर में प्रवेश कर गई हैं। व्यक्ति को अपनी जेब और सेहत को देखकर ही खरीददारी करनी चाहिए तथा कंपनियों द्वारा प्रायोजित छूट, सेल, ऑफर आदि के आकर्षण में फँसने से बचना चाहिए। लोन, क्रेडिट कार्ड और ईएमआई जैसे विकल्पों का बहुत सोच-विचारकर प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इससे धन का व्यय तो होता ही है साथ ही मानसिक तनाव भी बना रहता है। उपभोक्ता वस्तुएँ बनाने वाली कंपनियों की 'लेटेस्ट' और 'अपडेटेड' रखने की पॉलिसी को भी समझना होगा, जिसके माध्यम से व्यक्ति को निरंतर वस्तुएँ बदलते रहने के लिए प्रेरित किया जाता है। वर्तमान समय में व्यक्ति को यह समझना होगा कि उपभोक्तावाद एक बहुत बड़ा खेल है जिसमें सरकारें भी शामिल हैं। इस खेल में उच्च जीवन स्तर के नाम पर सबकुछ बेचा जाता है। सरकारें जीडीपी के बढ़ते आँकडों को देखकर अपनी पीठ थपथपा लेती हैं किन्तु उपभोक्तावाद के चलते हो रहे प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास की तरफ किसी की नजर नहीं जाती है। सच्चाई यह है कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का उद्देश्य 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना नहीं बल्कि विशुद्ध मुनाफाखोरी है। इसके माध्यम से तकनीकी रूप से समृद्ध और साधन संपन्न देश अपने आर्थिक साम्राज्य का विस्तार करने में लगे हुए हैं।